कमला नेहरू महिला महाविद्यालय ; भुबनेश्वर

हिंदी विभाग ; ई – पत्रिका

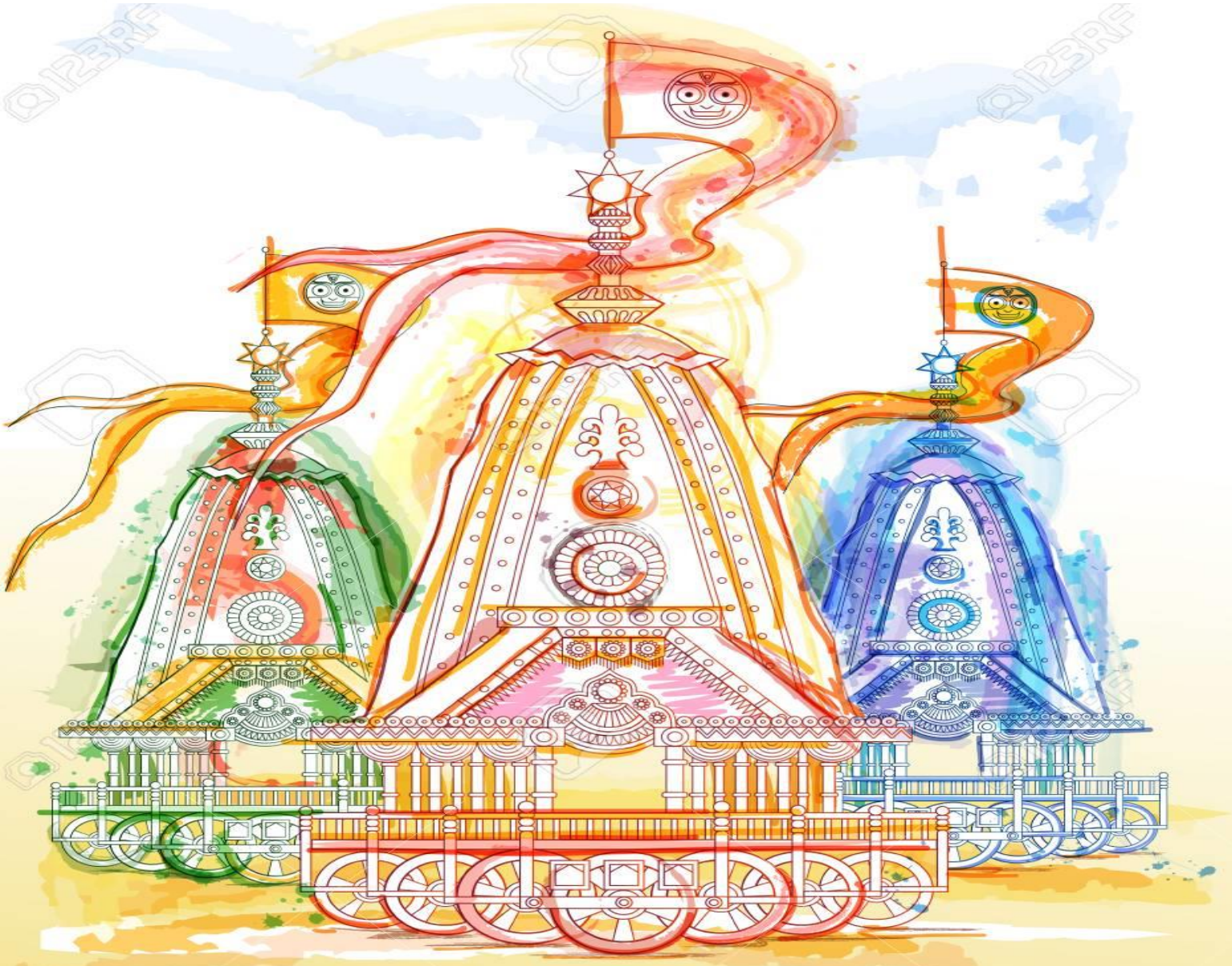

हिंदी भारती

जून – 2019

संपादक मंडली

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

उप – संपादक : कु. सस्मिता महंती

कु. श्राबणी महंती

संपादकीय

'हिंदी भारती' की ओर से महाप्रभु जगन्नाथ की पावन रथयात्रा की हार्दिक शुभकामनायें।

ओड़ीशा ललित कलाओं और संस्कृति की परिपोषक भूमि है। 'हिंदी भारती' के इस अंक में मई और जून के महीने में ओड़ीशा में मनाये जाने वाले पर्वों और उत्सवों की जानकारियाँ बड़े ही रोचक तरीके से विभाग की छात्राओं ने दिया है। हमारी ई - पत्रिका अब एक बहुत बड़े परिवर्तन के दौर से गुजरने वाली है। जिन छात्राओं को ले कर यह पत्रिका शुरु हुई थी, अब वे छात्रायें महाविद्यालय की शिक्षा समाप्त कर जीवन के बड़े लक्ष्य की ओर जाने की राह पकड़ चुकी हैं। थोड़े ही दिनों में नई छात्रायें आयेंगी, जो छात्रायें विभाग में हैं, वे नूतन परिवेश एवं नवीन पाठ्यक्रम के साथ सामंजस्य बिठाने की कोशिश में प्रयत्नशील रहेंगी। ऐसे में हो सकता है कि 'हिंदी भारती' के स्वरूप में भी परिवर्तन आये। आशा है आप हमारा साथ हर हाल में देते रहेंगे और अपनी बात हम तक पहुँचाते रहेंगे। "आपकी बात" हमारे लिये अखण्ड प्रेरणा का स्रोत है। कृपया अपनी बात हम तक पहुँचाते रहें। हम आशा करते हैं कि हर अंक की तरह आप इस अंक को भी स्वीकार करते हुए भविष्य में हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे और आपका आदर और स्नेह हमें इसी तरह मिलता रहेगा। अब हमारी पत्रिका को आप हमारे महाविद्यालय के वेब साइट www.knwcbbsr.com पर भी पढ़ सकते हैं।

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

अनुक्रमणिका

क्र सं.	शीर्षक	विधा	नाम	पृ.स .
1.	रथ यात्रा	लेख	संग्रहित	5
2.	तूफान	कहानी	पिंकी सिंह	8
3.	रज संक्रांति	लेख	सौदामिनी	12
4.	मिथुन संक्रांति	लेख	प्रज्ञा	13
5.	नागार्जुन	लेख	संग्रहित	16
6.	रमज़ान	लेख	शरीफा शरवारी	18
7.	सावित्री व्रत	लेख	शरीफा शरवारी	21
8.	आपकी बात			24
9.	बाबा नागार्जुन	यू ट्यूब लिंक		25
10.	यादों के गलियारों से	चित्र स्मृतियाँ	यादों के गलियारों से	26

रथ यात्रा

पुरी भगवान जगन्नाथ जी की लीला-भूमि है। उत्कल प्रदेश के प्रधान देवता श्री जगन्नाथ जी ही माने जाते हैं। यहाँ के वैष्णव धर्म की मान्यता है कि राधा और श्रीकृष्ण की युगल मूर्ति के प्रतीक स्वयं श्री जगन्नाथ जी हैं। इसी प्रतीक के रूप श्री जगन्नाथ से सम्पूर्ण जगत का उद्‌भव हुआ है। श्री जगन्नाथ जी पूर्ण परात्पर भगवान है और श्रीकृष्ण उनकी कला का एक रूप है। ऐसी मान्यता श्री चैतन्य महाप्रभु के शिष्य पंच सखाओं की है।

पूर्ण परात्पर भगवान श्री जगन्नाथ जी की रथयात्रा आषाढ़ शुक्ल द्‌वितीया को जगन्नाथपुरी में आरम्भ होती है। यह रथयात्रा पुरी का प्रधान पर्व भी है। इसमें भाग लेने के लिए, इसके दर्शन लाभ के लिए हज़ारों, लाखों की संख्या में बाल, वृद्‌ध, युवा, नारी देश के सुदूर प्रांतों से आते हैं।

रथ यात्रा का प्रारंभ -

कहते हैं कि राजा इन्द्रद्युम्न, जो सपरिवार नीलांचल सागर (उड़ीसा) के पास रहते थे, को समुद्र में एक विशालकाय काष्ठ दिखा। राजा के उससे विष्णु मूर्ति का निर्माण कराने का निश्चय करते ही वृद्ध बढ़ई के रूप में विश्वकर्मा जी स्वयं प्रस्तुत हो गए। उन्होंने मूर्ति बनाने के लिए एक शर्त रखी कि मैं जिस घर में मूर्ति बनाऊँगा उसमें मूर्ति के पूर्णरूपेण बन जाने तक कोई न आए। राजा ने इसे मान लिया और महाराज इंद्रद्युम्न की रानी गुंडिचा के महल में मूर्ति निर्माण में लग गए। राजा के परिवारजनों को यह ज्ञात न था कि वह वृद्ध बढ़ई कौन है। कई दिन तक घर का द्वार बंद रहने पर महारानी ने सोचा कि बिना खाए-पिये वह बढ़ई कैसे काम कर सकेगा। अब तक वह जीवित भी होगा या मर गया होगा। महारानी ने महाराजा को अपनी सहज शंका से अवगत करवाया। महाराजा के द्वार खुलवाने पर वह वृद्ध बढ़ई कहीं नहीं मिला लेकिन उसके द्वारा अर्द्धनिर्मित श्री जगन्नाथ, सुभद्रा तथा बलराम की काष्ठ मूर्तियाँ वहाँ पर मिली।

महाराजा और महारानी दुखी हो उठे। लेकिन उसी क्षण दोनों ने आकाशवाणी सुनी, 'व्यर्थ दु:खी मत हो, हम इसी रूप में रहना चाहते हैं मूर्तियों को द्रव्य आदि से पवित्र कर स्थापित करवा दो।' आज भी वे मूर्तियाँ पुरुषोत्तम पुरी की रथयात्रा और मन्दिर में सुशोभित व प्रतिष्ठित हैं।

पृष्ठभूमि में स्थित दर्शन और इतिहास -

किंवदंतियों में जगन्नाथ पुरी का इतिहास अनूठा है। आज भी रथयात्रा में जगन्नाथ जी को दशावतारों के रूप में पूजा जाता है, उनमें विष्णु, कृष्ण और वामन भी हैं और बुद्ध भी। अनेक कथाओं और विश्वासों और अनुमानों से यह सिद्ध होता है कि भगवान जगन्नाथ विभिन्न धर्मो, मतों और विश्वासों का अद्भुत समन्वय है। जगन्नाथ मन्दिर में पूजा पाठ, दैनिक आचार-व्यवहार, रीति-नीति और व्यवस्थाओं को शैव, वैष्णव, बौद्ध, जैन यहाँ तक तांत्रिकों ने भी प्रभावित किया है। भुवनेश्वर के भास्करेश्वर मन्दिर में अशोक स्तम्भ को शिव लिंग का रूप देने की कोशिश की गई है। इसी प्रकार भुवनेश्वर के ही मुक्तेश्वर और सिद्धेश्वर मन्दिर की दीवारों में शिव मूर्तियों के साथ राम, कृष्ण और अन्य देवताओं की मूर्तियाँ हैं। यहाँ जैन और बुद्ध की भी मूर्तियाँ हैं पुरी का जगन्नाथ मन्दिर तो धार्मिक सहिष्णुता और समन्वय का अद्भुत उदाहरण है। यहाँ तांत्रिकों के प्रभाव के जीवंत साक्ष्य भी हैं। सांख्य दर्शन के अनुसार शरीर के

२४ तत्वों के ऊपर आत्मा होती है। ये तत्व हैं- पंच महातत्व, पाँच तंत्र माताएँ, दस इन्द्रियों और मन के प्रतीक हैं। रथ का रूप श्रद्धा के रस से परिपूर्ण होता है। वह चलते समय शब्द करता है। उसमें धूप और अगरबत्ती की सुगंध होती है। इसे भक्तजनों का पवित्र स्पर्श प्राप्त होता है। रथ का निर्माण बुद्धि, चित्त और अहंकार से होती है। ऐसे रथ रूपी शरीर में आत्मा रूपी भगवान जगन्नाथ विराजमान होते हैं। इस प्रकार रथयात्रा शरीर और आत्मा के मेल की ओर संकेत करता है और आत्मदृष्टि बनाए रखने की प्रेरणा देती है। रथयात्रा के समय रथ का संचालन आत्मा युक्त शरीर करती है जो जीवन यात्रा का प्रतीक है। यद्यपि शरीर में आत्मा होती है तो भी वह स्वयं संचालित नहीं होती, बल्कि उस माया संचालित करती है। इसी प्रकार भगवान जगन्नाथ के विराजमान होने पर भी रथ स्वयं नहीं चलता बल्कि उसे खींचने के लिए लोक-शक्ति की आवश्यकता होती है।

सम्पूर्ण भारत में वर्षभर होने वाले प्रमुख पर्वों होली, दीपावली, दशहरा, रक्षा बंधन, ईद, क्रिसमस, वैशाखी की ही तरह पुरी का रथयात्रा का पर्व भी महत्त्वपूर्ण है। पुरी का प्रधान पर्व होते हुए भी यह रथयात्रा पर्व पूरे भारतवर्ष में लगभग सभी नगरों में श्रद्धा और प्रेम के साथ मनाया जाता है। जो लोग पुरी की रथयात्रा में नहीं सम्मिलित हो पाते वे अपने नगर की रथयात्रा में अवश्य शामिल होते हैं। रथयात्रा के इस महोत्सव में जो सांस्कृतिक और पौराणिक दृश्य उपस्थित होता है उसे प्राय: सभी देशवासी सौहार्द्र, भाई-चारे और एकता के परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। जिस श्रद्धा और भक्ति से पुरी के मन्दिर में सभी लोग बैठकर एक साथ श्री जगन्नाथ जी का महाप्रसाद प्राप्त करते हैं उससे वसुधैव कुटुंबकम का महत्व स्वत: परिलक्षित होता है। उत्साहपूर्वक श्री जगन्नाथ जी का रथ खींचकर लोग अपने आपको धन्य समझते हैं। श्री जगन्नाथपुरी की यह रथयात्रा सांस्कृतिक एकता तथा सहज सौहार्द्र की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखी जाती है।

हाफिजा बेगम, +3 तृतीय वर्ष

तूफान

"तूफान आ रहा है, बहुत बड़ा। सब चले जाओ।"

तूफान से आठ घंटे पहले शंकर चिल्ला चिल्ला कर सब गांव वालों को एक बार फिर सचेत कर रहा था। गांव के आधे से ज्यादा लोग वहां से जा चुके थे और कुछ उस आश्रय स्थलि जाने की तैयारी कर रहे थे। हवा की गति समय के साथ तेज़ होती जा रही थी और बारिश तो परसों रात से ही शुरु हो चुकी थी। सरकारी कर्मचारी बार बार आ कर उस मकान की ओर जाने के निर्देश दे रहे थे जहाँ इस तूफान से लोगों की रक्षा हो सके। वहाँ सभी प्रकार की सुविधा उपलब्ध थी।

शंकर यूँही चिल्लाते चिल्लाते तुलसी के घर के निकट तक आ गया था। तुलसी जिसका घर गांव के अंतिम छोर पर अवस्थित था। वो दिखने में सामान्य और स्वभाव में सरल थी। बचपन में ऐसे ही एक तूफान के समय अशांत समुद्र में उसके बाबा मछली पकड़ने गए थे आउर लौट्कर नहीं आये। दो दिनों बाद देखा तो बाबा का शव किनारे पड़ा हुआ था। मछुआरों का जीवन ही ऐसा होता है जो अपने पेशे को अपनी ज़िंदगी समझ लेते हैं। और जीवन में तो हमेशा उतार चढ़ाव आते रहते हैं, जैसे समुद्र में। पर कोई इन्हें पार कर आगे निकल जाता है तो कोई वहाँ डूब कर मर जाता है।

बाबा के मरने के बाद माँ ने कर्जा ले कर सूखी मछली बेचना शुरु कर दिया। जिसमें दोनों माँ बेटी का गुजारा हो जाता था। पर भाग्य को कुछ और ही मंजूर था, जल्दी ही महामारी के कारण उनका भी निधन हो गया। तभी तुलसी को शंकर का सहारा मिला। शंकर तुलसी से

8-9 साल बड़ा है। एक 14 साल की लड़की को नौजवान लड़के का यूँ सहारा देना, गांव वालों को खटकता था। पर इस बात का विरोध कर सके, ऐसा साहस किसी के पास नहीं था। इसका कारण शंकर भी एक अनाथ लड़का है जो गांव की आवारगी में पला बढ़ा था। और इस आवारगी ने उसे आगे चलकर एक बदमाश बना दिया। जिसने लोगों का जीना हराम कर रखा था।

शंकर और तुलसी का रिश्ता बचपन का था। शंकर की नज़र में तुलसी के प्रति उसका आकर्षण प्यार है। और वो यह बात भी भली भांति जनता था कि तुलसी उसे प्यार नहीं करती है। वो तो उसे केवल एक अच्छे दोस्त और सहायक के रूप में देखती है। इस दोस्ती को प्यार का रूप देने के लिए शंकर बहुत बार चेष्टा कर विफल हो चुका था। तुलसी शंकर के प्रेम से परिचित थी लेकिन उसे अपनाने में वो असमर्थ थी, क्योंकि बचपन से ही शंकर के उस पर बहुत एहसान थे। जिससे वो उतारना चाहती थी पर प्यार के द्वारा नहीं। प्यार देने से उस सहारे को एक नाम मिल जाता जो उसे मंजूर नहीं था। इसलिए प्यार होने के बावजूद शंकर को एक दोस्त के रूप में अपनाया था ।

तुलसी के घर पहुच कर शंकर ने देखा कि तुलसी एक कोने में चुपचाप बैठी हुई थी। यह बात उसे समझ में नही आई कि जहाँ सारे लोग तूफान के डर से अपने घर छोड़ रहे हैं, वहाँ तुलसी ऐसे चुप कैसे बैठ सकती है।

शंकर बोला -

"तुलसी तू नहीं जाएगी वहाँ"

"नहीं" एक संक्षिप्त सा उत्तर दे कर फिर चुप हो गई।

"पर क्यों, तुझे अपनी जान नहीं बचानी?"

तुलसी का उत्तर न पा कर वो फिर बोला "जानती है ये कितना बड़ा तूफान है। टी.वी. में बता रहे थे बहुत बड़ा है जो इससे पहले कभी नहीं आया। बता रहे थे कि उसका प्रवेश यही कहीं पर है। तो तू ...."

"नहीं जाना है तो बस नहीं जाना है।" शंकर की बात को बीच में काटते हुए वो बोली "मरना होगा तो यहीं मरूँगी और अगर जीना होगा तो कालिया भरोसे"

"इतना गुस्सा क्यों? मैंने तो बस पूछा है।"

शंकर थोड़ा आहत स्वर में बोला। भले ही वो लोगों को डरता धमकाता हो पर प्यार के कारण हमेशा तुलसी के सामने फीका पड़ जाता है। उसे आहत देख तुलसी बोली

"क्यों जाऊं मैं शंकर, इसी तूफान ने मेरे बाबा को मुझसे छीना था, मेरी माँ मर गई। शायद अब

मेरी बारी हो!"

ये कहते कहते उसकी आंखें नम हो आई, गला बैठ गया।

"ऐसा क्यों कह रही है रे पगली, अगर तू न रहेगी तो मेरा कौन है यहां।मैं किसके लिए जिऊँगा?"

"अपने लिए शंकर और किसके लिए।"

"पर मेरा तो सब कुछ तू ही है न, तू नहीं तो मेरा क्या?"

"मैं कुछ नहीं हूं शंकर, चला जा यहाँ से"

तुलसी शंकर की बात की गहराई को समझ रही थी, पर सब कुछ जान कर भी वो अनजान बनने का नाटक कर रही थी। इसके बाद वो कुछ नहीं बोली इसी आशा में कि शंकर शायद ही वहाँ से चला जाए। पर शंकर गया नहीं। बल्कि उसकी ओर पीठ करके वहीं चुपचाप पड़ा रहा। बहुत समय हो गया पर किसीके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला। ये शायद तूफान की पूर्व वाली खामोशी थी। हाँ केवल हवा की तेज आवाज़ ही सुनाई दे रही थी। चारों ओर सन्नटा छाया हुआ था। गांव में एक व्यक्ति या जानवर का नामोनिशान भी नहीं था, शायद इंसानों के साथ साथ जानवर भी समझ चुके थे हवा के इस बहाव को। केवल वहाँ मौजूद कुछ पेड़ अपना पूरा दम लगाकर उस तूफान का सामना कर रहे थे। इस भयंकर नज़ारे को देख कर तुलसी बोली

"ज़िद मत कर शंकर, चला जा यहाँ से।"

"नहीं जाऊंगा, तू नहीं तो मैं भी नहीं।"

"अब नामुमकिन है, आश्रयस्थल यहाँ से 2 किलोमीटर दूर है। तू चला जा मैं नहीं जा पाऊँगी इस तूफान में"

"नहीं अगर चलना है तो दोनों नहीं, कोई भी नहीं।"

इस बात का तुलसी कुछ उत्तर दे पाती इससे पहले तुलसी के घर की छत उड़ गई। शंकर और कुछ उपाय न पाकर उसका हाथ पकड़कर घर से बाहर ले गया। देखते ही देखते उसके घर का सारा सामान इधर उधर उड़ने लगा था। जोरदार बारिश के कारण मिट्टी से बना उसका घर ढ़हने लगा था। तुलसी को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उसका घर मिट्टी में मिलने लगा है। वो अपने घर को देखना चाहती थी, एक आखिर बार जो इस तूफान में नमुमकिन था। अतः उसको शंकर के साथ जाना पड़ा।

पर हवा इतनी तेज थी कि उनके पैर जमीन पर टिक पाना मुश्किल होता जा रहा था। सारे विशालकाय पेड़ धीरे धीरे जड़ समेत उखड़ रहे थे, और उनके रास्ता को अवरोध बन रहे थे। आज समुद्र भी बहुत अशांत था। वो बार बार अपनी सीमा लांघ कर गांव की ओर बढ़ रहा था।

और बारिश भी इतनी जोर से हो रही थी कि लगता था अभी बाढ़ आ जाएगी। परिस्थिति इतनी भयंकर थी कि उससे निकल पाना किसीके लिए भी असम्भव था। पर जान तो बचाना है और कोई दूसरा उपाय भी नहीं था। उन्हें हर हाल में प्रकृति के इस क्रोध का सामना करना ही होगा। पर धीरे धीरे स्थिति और भी उलझने लगी। पेड़ किसी भी क्षण उनपर गिर सकता था, हवा उन्हें किसी भी क्षण उड़ा ले जा सकती थी। पर हार न मानकर वे यूँ ही चलते रहे एक दूसरे का सहारा बन कर। आज उनकी गति धीमी थी और प्रकृति की गति तेज। उस विपदपूर्ण यात्रा के दौरान शंकर ने एक पल के लिए भी तुलसी का हाथ नहीं छोड़ा। तब तक जब तक के वे वहाँ पहुंच नहीं गये। कई बार ऐसा हुआ जब तुलसी ने शंकर की जान बचाई और अस्थिर शंकर एकाएक आगे बढ़े जा रहा था।

इसी प्रकार कई कष्ट, असुविधा को झेल कर जब वे पहुंच गए तब दोनों के मन में एक अदभुत आनन्द की लहरें बहने लगी थी। तुलसी ने इस सफर के दौरान शंकर का वो प्यार देखा जिसे उसने इतने दिनों तक देख कर भी देख नहीं पा रही थी। कुछ देर बाद शंकर बोला "भगवान का लाख लाख धन्यवाद, कि हम यहाँ सही सलामत पहुंच गए।"

पर हवा के तेज हुंकार के कारण वह शंकर के इस बात को सुन नहीं पाई थी। क्योंकि वो मन ही मन तय कर चुकी थी कि आज शंकर को उसका इनाम देकर रहेगी। पर जब उसने शंकर को पुकारा तो देखा कि शंकर की आंखे कुछ देख रही थी, केवल शंकर की नहीं बल्कि वहाँ उपस्थित हर इंसान की आंखे कुछ देख रही थी। जैसे ही वह मुड़ी तो उसकी आँखें भी खुली की खुली रह गई थी। पीछे से एक व्यक्ति जोर से चिल्लाया

"अरे भागो यहाँ से चलो छत के ऊपर।"

क्या यही सच्चाई है। यही उनका अंत है? जिससे बचने के लिए वे यहाँ आए थे। क्योंकि विशाल समुद्र उनका पीछा करते करते सब कुछ अपने अंदर समाते हुए उन्हें भी निगलने के लिए तेज़ी से चला आ रहा था। उस विशाल समुद्र को अपनी ओर आता देख जहाँ चारों ओर भागदौड़ मची हुई थी वहाँ शंकर और तुलसी एकदूसरे का हाथ और भी मजबूती से पकड़ लिया था। ताकि कोई उन्हें अलग न कर सके। वे यूँ ही हाथ पकड़ कर खड़े रहे और इंतजार करते रहे ताकि समुद्र के गर्भ में हमेशा के लिए लीन हो जाए।

पिंकी सिंह, भूतपूर्व छात्रा

सूर्य के अलग-अलग राशि, नक्षत्र में प्रवेश होने पर 12 महिनों में 12 सक्रांति होती है। इन सभी सक्रांति में दान-दक्षिणा, स्नान,पुण्य का बहूत महत्व रहता है। मिथुन सक्रांति उनमें से ही एक है। इस दिन सूर्य-वृषभ शशि से निकल कर मिथुन शशि में प्रवेश करता है। ओड़िशा में यह पर्व 4 दिनों तक बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है और पहली बारिश का स्वागत किया जाता है। ओड़िशा में अच्छी खेती व बारिश की मनोकामना के लिए रजो पर्व मनाते हैं, जिसमें सभी लोग बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते है। खासतौर से औरतें और लड़कियां इसे मनाती हैं। जैसे औरतों को हर महीने मासिक धर्म होता है, जो उनके शरीर के विकास का प्रतीक है, वैसे ही धरती माँ या भूदेवी, उन्हें भी तीन दिनों तक मासिक धर्म होता है, जो धरती के विकास का प्रतीक है। इस पर्व में ये तीन दिन यही माना जाता है कि भूदेवी को मासिक धर्म हो रहे हैं। चौथे दिन भूदेवी को स्नान कराया जाता है। इस दिन को वसुमती स्नान कहते है। पीसने वाले पत्थर जिसे सिल बट्टा कहते है, भूदेवी का रूप माना जाता है। इस पर्व में धरती की पूजा की जाती है, ताकि अच्छी फसल मिले।

इस वर्ष 2019 में मिथुन रज सक्रांति 14जून, शुक्रवार को मनाया गया तथा 17 जून सोमवार को समाप्त हुआ। चार दिन चलने वाले इस पर्व में पहले दिन को पहली रज, दूसरे दिन को मिथुन सक्रांति या रज सक्रांति, तीसरे दिन को भू दाहा या बासी रज और चौथे दिन को वसुमती स्नान कहते हैं। चार दिनों के इस पर्व में शुरु के तीन दिन औरतें एक जगह इकट्ठे होकर मौज मस्ती किया करती हैं। नाच, गाना, कई तरह के खेल होते है। बरगद के पेड़ में झूले लगाये जाते है, सभी इसमें झूलकर गीत गाते हैं। इस पर्व में अविवाहित कन्यायें बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेती हैं। सब साड़ी पहनती है, मेहंदी और अलता से शृंगार करती हैं और अच्छे वर की चाह और सुखमय जीवन के लिए प्रार्थना करती हैं।

सौदामिनी, +3 द्वितीय वर्ष

रज संक्रांति मिथुन राशि में सूर्य के प्रवेश के अवसर पर मनाया जाता है। दक्षिण भारत में यह पर्व मिथुना शंकरमणम के नाम से जाना जाता है। इसे हिन्दू परंपरा व रिवाजों के अनुसार सबसे शुभ अवसरों में से एक माना जाता है। ओड़िशा में लोग इसे रज संक्रांति के रूप में मनाते हैं। चार दिनों के इस पर्व में कई दिलचस्प गतिविधियां होती है। यह ओडिशा में कृषि वर्ष की शुरुआत के साथ साथ विशेष रूप से इस पर्व को मनाते हुए आधिकारिक तौर पर लोग पहली बारिश का स्वागत करते हैं।

इस रज पर्व में गली मुहल्लों तक में कार्यक्रम आयोजित कर यह पर्व मनाया जाता है। विशेष कर कुंवारी कन्याओं में रज पर्व को लेकर उत्साह है। रज संक्रांति के चलते कई कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। युवतियां सुबह से नहा धोकर नये कपड़े पहनकर बच्चों के साथ झूले का आंनद लेती हैं।

रज पीठा के साथ मीठा पान खा कर रज गीत गुनगुनाते हुए रज उत्सव मनाती हैं। घरों में भी उत्सव का माहौल होता है तथा तरह तरह के पकवान सभी घरों में तैयार किये जाते हैं। सिनेमा हॉल में भी लोगों की भारी भीड़ देखी जाती है। सिनेमा के साथ ही लोग ताश, कैरम, लूडो आदि खेलों का मज़ा लेते हैं। इस अवसर पर पीठा, आम, कटहल आदि फलों का सेवन करते हैं। रज पर्व की खासियत है, लबें-लबें बाँस के झूले, जिसमें सब खूब मज़े में झूलते हैं और मीठा पान खाते हैं। रज का मीठा पान खाना लोग नही भूलते हैं। रज पर्व में दुकान का और घर का पान बहुचर्चित है। काजू, किशमिश, कैंडी के साथ प्रस्तुत पान खाने में एक अलग ही मजा है। और दुकान में तो पान खरीदने के लिए लोगों की लंबी कतार लगती है। 10 रुपये से लेकर 200 रुपये तक का मीठा पान लोग खुसी से खरीदते हैं। इस पर्व का सब बड़ी बेसब्री से इंतजार करते

हैं। यह सबके लिए खूब सारी खुशियां लेके आती है। पूरा परिवार एकत्रित होकर यह पर्व मानाता है।

उड़ीसा में यह पर्व 4 दिनों तक बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है, और पहली बारिश का स्वागत किया जाता है। उड़ीसा में अच्छी खेती व बारिश की मनोकामना के लिए रज पर्व मनाते हैं, जिसमें सभी लोग बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते हैं। इस वर्ष 2019 में मिथुन रज संक्रांति 14 जून, दिन शुक्रवार से मानाना शुरू हुआ, तथा 17 जून, दिन सोमवार को समाप्त हुआ। चार दिन चलने वाले इस पर्व में पहले दिन को पहिली राजा, दुसरे दिन को मिथुन संक्रांति या रज, तीसरे दिन को भू दाहा या बासी रज व चौथे दिन को वसुमती स्नान कहते है। पत्थर जिसे सिल बट्टा कहते है, भूदेवी का रूप माना जाता ह। इस पर्व में धरती की पूजा की जाती है, ताकि अच्छी फसल मिले।

रज पर्व मनाने का तरीका -

मिथुन संक्रांति में भगवान् सूर्य की पूजा की जाती है। उनसे आने वाले जीवन में शांति की उपासना करते हैं। पर्व के चार दिन शुरू होने के पहले वाले दिन को सजबजा दिन कहते है, इस दिन घर की औरतें आने वाले चार दिनों के पर्व की तैयारी करती हैं। सिल बट्टे को अच्छे से साफ करके रख दिया जाता है। मसाला पहले से पीस लेती हैं, क्यूंकि आने वाले चार दिन सिल बट्टे का प्रयोग नहीं किया जाता है। चार दिनों के इस पर्व में शुरू के तीन दिन औरतें एक जगह इकठ्ठा होकर मौज मस्ती किया करती हैं। नाच, गाना, कई तरह के खेल होते हैं। बरगद के पेड़ में झूले लगाये जाते है, सभी इसमें झूलकर गीत गाती हैं। इस पर्व में अविवाहित युवतियाँ भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लेती हैं। वे पारंपरिक साडी पहनती है, मेहँदी आलता लगाती हैं। अविवाहित अच्छे वर की चाह में ये पर्व मनाती हैं। कहते हैं जैसे धरती बारिश के लिए अपने आप को तैयार करती है, उसी तरह अविवाहित भी अपने आप को तैयार करती है, और सुखमय जीवन के लिए प्रार्थना करती हैं।

शुरू के तीन दिन औरतें बिना पका हुआ खाना खाती हैं, नमक नहीं लेती, साथ ही ये तीन दिन वे चप्पल भी नहीं पहनती हैं। ये तीन दिन औरतें न कुछ काट-छिल सकती है, न धरती पर किसी तरह की खुदाई की जाती हैं। पहले दिन भोर के पहले उठ कर, चन्दन हल्दी का लेप लगाकर, सर धोकर नहाया जाता है, बाकि के दो दिन इस पर्व में नहीं नहाते हैं।

चौथे दिन की पूजा की विधि इस प्रकार है -

सिल बट्टे में हल्दी, चन्दन, फूलों को पीस कर पेस्ट बनाया जाता है, जिसे सभी औरतें सुबह उठकर अपने शरीर में लगाकर नहाती हैं। पीसने वाले पत्थर (सिल बट्टे) की भूदेवी मानी जाती हैं। उन्हें दूध, पानी से स्नान कराया जाता है। उन्हें चन्दन, सिन्दूर, फूल व हल्दी से सजाया जाता है। इनकी पूजा करने के बाद, इस कपड़े के दान का विशेष महत्व है। सभी मौसमी फलों का चढ़ावा भूदेवी को चढ़ाते है, व उसके बाद पंडितों और गरीबों को दान कर देते हैं। बाकि संक्रांति की तरह इस दिन, घर के पूर्वजों को श्रधांजलि दी जाती है। दूसरे दिन मंदिर में जाकर पूजा करने के बाद, गरीबों को दान दिया जाता है। पवित्र नदी में स्नान किया जाता है।
इस दिन विशेष रूप से पोड़ा-पीठा नाम की मिठाई बनाई जाती है, जो गुड़, नारियल, चावल के आटे व घी से बनती है। इस दिन चावल के दाने नहीं खाए जाते हैं। मिथुन संक्रांति त्यौहार का आयोजन होता है। इस दौरान सभी पुरुष अपने को व्यस्त रखने के लिए तरह तरह के प्रतियोगिता का तैयारियाँ करते हैं। इसमें कब्बडी सबसे प्रचलित है। रात भर नाच गाने का सिलसिला चलता रहता है। शहर की व्यस्त ज़िन्दगी में ये त्यौहार कम ही मनाया जाता है, लेकिन गाँव में तो इस त्यौहार को विशेष रूप से और उत्साह से मनाते हैं। किसान वर्ग के लिए ये धरती माँ को धन्यवाद करने का विशेष दिन है। रात को लोक नृत्य से सबका मनोरंजन होता है। ये त्यौहार चारों और खुशियाँ व रंग बिखेर देता है, जिसका इंतजार औरतें बहुत चाव से करती है, क्यूंकि इस दौरान उन्हें घर के कामों से छुट्टी भी मिल जाती है।

प्रज्ञा, +3 तृतीय वर्ष

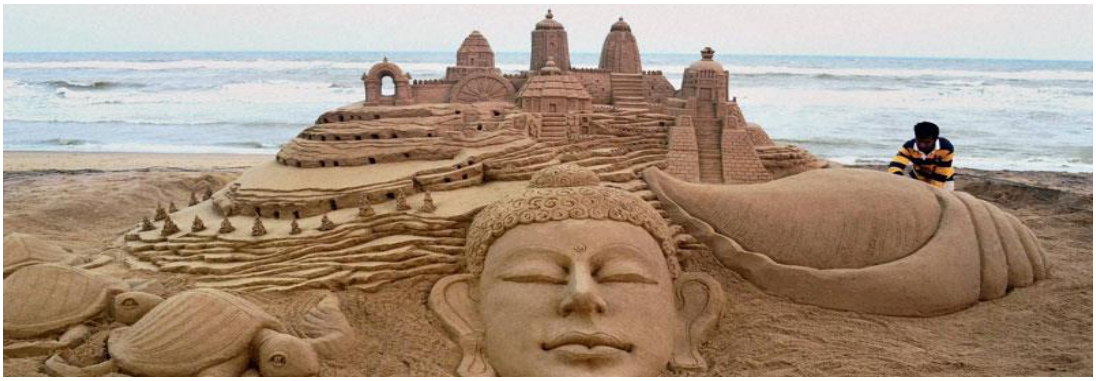

नागार्जुन

नागार्जुन (30जून 1911- 5 नवम्बर 1998) हिन्दी और मैथिली के अप्रतिम लेखक और कवि थे। अनेक भाषाओं के ज्ञाता तथा प्रगतिशील विचारधारा के साहित्यकार नागार्जुन ने हिन्दी के अतिरिक्त मैथिली संस्कृत एवं बाङ्ला में मौलिक रचनाएँ भी कीं तथा संस्कृत, मैथिली एवं बाङ्ला से अनुवाद कार्य भी किया। साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित नागार्जुन ने मैथिली में **यात्री** उपनाम से लिखा तथा यह उपनाम उनके मूल नाम **वैद्यनाथ मिश्र** के साथ मिलकर एकमेक हो गया।

प्रकाशित कृतियाँ

कविता-संग्रह-

1. युगधारा -१९५३
2. सतरंगे पंखों वाली -१९५९
3. प्यासी पथराई आँखें -१९६२
4. तालाब की मछलियाँ -१९७४
5. तुमने कहा था -१९८०
6. खिचड़ी विप्लव देखा हमने -१९८०
7. हजार-हजार बाँहों वाली -१९८१
8. पुरानी जूतियों का कोरस -१९८३
9. रत्नगर्भ -१९८४
10. ऐसे भी हम क्या! ऐसे भी तुम क्या!! - १९८५
11. आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने -१९८६
12. इस गुब्बारे की छाया में -१९९०
13. भूल जाओ पुराने सपने -१९९४
14. अपने खेत में -१९९७

प्रबंध काव्य-

1. भस्मांकुर -१९७०
2. भूमिजा

उपन्यास-

1. रतिनाथ की चाची -१९४८
2. बलचनमा -१९५२
3. नयी पौध -१९५३
4. बाबा बटेसरनाथ -१९५४
5. वरुण के बेटे -१९५६-५७
6. दुखमोचन -१९५६-५७
7. कुंभीपाक -१९६० (१९७२ में 'चम्पा' नाम से भी प्रकाशित)
8. हीरक जयन्ती -१९६२ (१९७९ में 'अभिनन्दन' नाम से भी प्रकाशित)
9. उग्रतारा -१९६३
10. जमनिया का बाबा -१९६८ (इसी वर्ष 'इमरतिया' नाम से भी प्रकाशित)[22]
11. गरीबदास -१९९० (१९७९ में लिखित)

संस्मरण-

1. एक व्यक्ति: एक युग -१९६३

कहानी संग्रह-

आसमान में चन्दा तैरे -१९८२

आलेख संग्रह-

1. अन्नहीनम् क्रियाहीनम् -१९८३
2. बम्भोलेनाथ -१९८७

बाल साहित्य-

1. कथा मंजरी भाग-१ -१९५८
2. कथा मंजरी भाग-२ -
3. मर्यादा पुरुषोत्तम राम -१९५५ (बाद में 'भगवान राम' के नाम से तथा अब 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के नाम से प्रकाशित)
4. विद्यापति की कहानियाँ -१९६४

मैथिली रचनाएँ-

1. चित्रा (कविता-संग्रह) -१९४९
2. पत्रहीन नग्न गाछ (") -१९६७
3. पका है यह कटहल (") -१९९५ ('चित्रा' एवं 'पत्रहीन नग्न गाछ' की सभी कविताओं के साथ ५२ असंकलित मैथिली कविताएँ हिंदी पद्यानुवाद सहित)
4. पारो (उपन्यास) -१९४६
5. नवतुरिया (") -१९५४

बाङ्ला रचनाएँ-

मैं मिलिट्री का बूढ़ा घोड़ा -१९९७ (देवनागरी लिप्यंतर के साथ हिंदी पद्यानुवाद)

संचयन एवं समग्र-

- **नागार्जुन रचना संचयन** - सं०-राजेश जोशी (साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली से)
- **नागार्जुन : चुनी हुई रचनाएँ** -तीन खण्ड (वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली से)
- **नागार्जुन रचनावली** -२००३, सात खण्डों में, सं० शोभाकांत (राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली से)

शब-ए-बरात-

शब-ए-बरात रमजान के 15 दिन पहले आता है। शब-ए-बरात दो शब्दों से मिलकर बना है। शब का अर्थ है रात और बरात का अर्थ है अपने गुनाहों से मुक्त होना। यह रात साल में एक बार आता है। मुसलमानों के लिए यह रात बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस दिन विश्व के सारे मुसलमान शाम से लेकर सुबह तक यानी रात भर इबादत यानी प्रार्थना करते हैं। अगले दिन सुबह रोजा रखते है। शब-ए-बरात जब आता हैं तो सारे मुसलमान समझ जाते हैं अब रमजान आने में ज्यादा देर नहीं है। तो सारे मुसलमान रमजान का बेसब्री से इंतजार करते हैं उनके मन यह खुशी होती है की अब रमजान आनेवला है जो सब मुसलमान को बहत पसंद है।

रमजान -

विश्व के सारे मुसलमान इस महिने को पवित्र मानते हैं। इस महीने को रमजान कहते हैं। रमजान के दौरान मुस्लिम धर्म के लोग 30 दिन तक उपवास रखते हैं। इन्हें रोजा कहते हैं। इस्लाम धर्म में रोजा को अपने हर दिन के फर्ज की तरह 30 दिन तक अल्लाह का शुक्रिया अदा करने का त्योहार माना जाता है, जो 30 दिन तक रोजा रखकर सच्चे मन से अल्लाह का हर दिन इबादत करते हैं उसे रोजेदार कहते हैं। इस के दौरान कुछ लोग जैसे बुजुर्ग, जो व्यक्ति बीमार होने पर इन्हें रोजा रखने पर बाध्य नहीं किया जता है। रमजान आने पर घरों में रमजान की तैयारियां चलती है। बजार से लोग रोजा के लिए इफ्तार ओर सहरी के लिए सामान खरीदते हैं।

रमजान का पाक महीना इस साल 2019 में 6 मई को चांद देखने के बाद शुरू हुआ था। चांद देखने के बाद रात में पहला तरावीह की नमाज पढ़ते हैं। 7 मई को पहला रोजा हुआ था। रोजे के दौरान हर दिन सुबह सूरज उगने से पहले कुछ खाना खाते हैं। यह खाना खाने का वक्त सुबह 4 बजे तक होता है। उसके बाद कुछ नहीं खाते हैं। दिन भर उपवास रखते हैं। दिन भर कुरान और 5 वक्त का नमाज पढ़ते हैं। रोजे के दौरान सुर्योदय से लेकर सुर्यास्त तक कुछ भी नहीं खाते-पीते हैं। शाम समय रोजेदार रोजा खोलने या तोड़ने के लिए जो खाना खाते हैं उसे इफ्तारी कहते हैं। रोजे दार खजूर खाकर रोजा तोड़ते हैं। फिर जो सामान होता है, उसे खाते हैं, और शरबत पीते हैं। ऐसे महीने भर रोजे रखते हैं। रात में तरावीह का नमाज पढ़ते हैं। इस महीने में पुण्य कार्य करने को प्रधानता दी जाती है। इसलिए इस महीने को नेकियों और इबादत का महीना कहा जाता है। रोजे के दौरान दान-दक्षिणा दिये जाने की परंपरा है। हर मनुष्य अपने हैसियत के मुताबिक जरूरत मंद को दान देते हैं। इस दान को जकात के नाम से जाना जाता है।

सदका और खैरात-

यह भी रमजान के दौरान ही दिया जाता है। इसका अर्थ है जो जरूरत मंद हैं उनकी मदद करना और अपने जरूरत को कम करना ताकि दुसरों की मदद कर सकें। चाहें वह अन्य धर्म के क्यों ना हो। इसे भी इबादत कहते हैं। ऐसा करने से लोगों के गुनाह कम होते हैं, और पुण्य ज्यादा मिलता हैं। इस महीने में गरीब लोग जिन के पास इफ्तार करने के लिए पैसे नहीं होते उन्हें इफ्तार कराने से उनके गुनाह माफ हो जाता हैं।

एतेकाफ-

एतेकाफ में बैठन -यानी गांव और शहर के लोग अपने उन्नती व कल्याण के लिए अल्लाह से दुआ यानी प्रार्थना करते हुए मौन व्रत धारण करते हैं। जिस में वह सिर्फ कुरान और नमाज पढ़ते हैं और दुआ मांगते हैं। वह अपने मर्जी के मुताबिक जितने दिन बैठ सकते हैं। मगर वह ईद का चांद जब देख लेते हैं और पता हो जाता है कि ईद कल होने वाला है तो उसी दीन एतेकाफ से उठते हैं। अल्लाह का शुक्रिया अदा करते हुए महीने गुजर जाता है। ईद किस दिन पड़ेगा इसका निर्धारण भी चांद देखने के बाद किया जाता हैं। जब चांद रात में दिख गया तो उस रात को चांद रात के नाम से पुकारा जाता है। लोगों के मन में ईद के लिए खुशी तो

होती है मगर रमजान खत्म हो जाने का दुख भी होता है क्यों के रमजान महीना ईद से खत्म होता हैं। अगले दिन सुबह ईद का त्योहार मनाया जाता हैं।

पाक महीना रमजान का आखिरी मंगलवार था। ईद का त्योहार रमजान का चांद डूबने ओर ईद का चांद नजर आने पर मनाया जाता है। रमजान का महीना ईद- उल- फितर से खत्म होता है। ईद की खुशी होती है, मगर उतना ही दुःख रमजान का खत्म हो जाने का रहता है। रमजान के खत्म होने पर अल्लाह का शुक्रिया अदा करते हैं कि उन्हें महीने भर के रोजे रखने की शक्ति दी। इस महिने में अपने गुनाहों के लिए माफी और अपने परिवार, अपने करीबी लोगों या दोस्त के लिए दुआ मांगते हैं। चांद देखने के लिए रोजेदारों में बड़ी उत्सुकता रहती है। सब शाम से आसमान को देखते रहते हैं, कि कब चांद नजर आएगा। चांद जब देख लेते हैं तब सब बहुत खुश होते है। क्योंकि अगले दिन ईद होने वाली है। जिस रात चांद दिखता है उस रात को चांद रात कहते हैं। सारे विश्व में यह उत्सव मुसलमान मनाते हैं। यह त्योहार मूल रूप से आपस में भाईचारे का पर्व है। इस पर्व को सब मिलकर मनाते हैं। अलग मजहब और रिश्तेदारों से खासतौर पर ईद की मुबारकबाद देते हैं।

ईद की विशेषता यह है कि सारे मुसलमान एक महत्वपूर्ण नमाज अदा करते हैं। जिस के लिए सब मुसलमान एक स्थान पर एकत्रित होते हैं। इसे ईदगाह कहते हैं। ईदगाह में सब लोग मिलकर एक साथ नमाज पढ़ते हैं। नमाज खत्म हो जाने के बाद सभी लोग एक दूसरे के गले मिलकर ईद मुबारक कहते हैं। ईद की खुशी बड़ों से लेकर बच्चों तक देखने को मिलती है। ईद के दिन सुबह सब बच्चों से लेकर बड़ों तक नये कपड़े पहनते हैं। कपड़े पहन कर मस्जिद जाते हैं। नमाज के बाद सभी लोग अपनी हैसियत के मुताबिक सभी जरूरतमंदों की मदद करते हैं, इस मदद को फितरा कहते हैं। इस दिन सभी घर के बड़े, अपने से छोटों को पैसे देते हैं, जिसे ईदी कहते हैं। सबके घर जाकर सलाम यानी ईद मुबारक कहते हैं। ऐसा कर्ने से रिश्ता बना रहता है और बड़ों से दुआयें मिलती हैं। सिवैयां इस त्योहार का सबसे जरूरी खाना है, जिसे सभी बड़े खुशी से खाते हैं तथा दोस्तों और रिश्तेदारों को अपने घर खाने पर बुलाते हैं। उस दिन सभी लोग खाना मिल कर खाते हैं। इससे आपस में प्रेम और रिश्ता हमेशा बना रहता है।

शरीफा शरवारी, +3 तृतीय वर्ष

सावित्री व्रत

ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या वट सावित्री अमावस्या कहलाती है। इस दिन सौभाग्यवती महिलाएं अखंड सौभाग्य प्राप्त करने के लिए वट सावित्री व्रत रखकर वटवृक्ष और यमदेव की पूजा करती हैं। भारतीय संस्कृति में यह व्रत आदर्श नारीत्व का प्रतीक एवं पर्याय बन चुका है। वट सावित्री व्रत में वट और सावित्री, दोनों का विशेष महत्व है। सावित्री व्रत एक सुहागन के लिए महत्वपूर्ण होता है। इस दिन सुहागन अपने पति की लंम्बी उम्र और खुशियों लिए व्रत करती हैं। सावित्री की तरह हर मुश्किल में रक्षा करने के लिए अपने पति का रक्षा कवच बन सके इस लिए प्रार्थना करती हैं। इस दिन सरी सुहागने कुछ नहीं खाती। दोपहर को पूजा खत्म होने के बाद आम, कटहल, अननास, साग़, ताल सज्जा या तरकुल आदि सारे फलों को मिला कर भोग तैयार करती हैं और उसी को खाती हैं। जिस तरह से सावित्री अपने साहस से, पति के प्रति प्रेम, भक्ति, बिना स्वार्थ के अपने पति को यम से वापस लौटा लाई थी, इसी प्रकार वे भी पुजा करती हैं। सावित्री अपने पति भक्ति में अतुलनीय हैं। यही सारी बातें इस पुजा को महत्व पूर्ण बनाती हैं।

वट-सावित्री व्रत कथा-

सावित्री राजा अश्वपति की पुत्री थी, जिसे राजा ने बहुत कठिन तपस्या करने के उपरांत देवी सावित्री की कृपा से प्राप्त किया था। इसलिए राजा ने उनका नाम 'सावित्री ' रखा था। सावित्री

बहुत गुणवान और रूपवान थी, लेकिन उसके अनुरूप योग्य वर न मिलने के कारण सावित्री के पिता दुखी रहा करते थे। इसलिए उन्होंने अपनी कन्या को स्वयं अपना वर तलाश करने भेज दिया और इस तलाश में एक दिन वन में सावित्री ने सत्यवान को देखा और उसके गुणों के कारण मन में ही उसे वर के रूप में वरण कर लिया। सत्यवान साल्व देश के राजा द्युमत्सेन के पुत्र थे, लेकिन उनका राज्य किसी ने छीन लिया था और काल के प्रभाव के कारण सत्यवान के माता- पिता अंधे हो गये थे। सत्यवान व सावित्री के विवाह से पूर्व ही नारद मुनि ने यह सत्य सावित्री को बता दिया था कि सत्यवान अल्पायु है, अतः वह उससे विवाह न करे। यह जानते हुए भी सावित्री ने सत्यवान से विवाह करने का निश्चय किया और देवर्षि नारद से कहा "भारतीय नारी जीवन में मात्र एक बार पति का वरण करती है, बारंबार नहीं। अतः मैंने एक बार ही सत्यवान का वरण किया है और यदि उसके लिए मुझे मृत्यु से भी लड़ना पड़े तो मैं यह करने को तैयार हूं।“

उसकी मृत्यु का समय निकट आने पर मृत्यु से तीन दिन पूर्व ही सावित्री ने अन्न-जल का त्याग कर दिया। मृत्यु वाले दिन जंगल में जब सत्यवान लकड़ी काटने के लिए गये तो सावित्री भी उनके साथ गई और जब मृत्यु का समय निकट आ गया तथा सत्यवान के प्राण हरने लिए यमराज आए तो सावित्री भी उनके साथ चलने लगी। यमराज के बहुत समझाने पर भी वह वापस लौटने को तैयार नहीं हुई। तब यमराज ने उससे सत्यवान के जीवन को छोड़कर अन्य कोई भी वर मांगने को कहा। उस स्थिति में सावित्री ने अपने अंधे सास-ससुर की नेत्र ज्योति और ससुर का खोया हुआ राज्य मांग लिया, किंतु वापस लौटना स्वीकार न किया। उसकी अटल पतिभक्ति से प्रसन्न होकर यमराज ने जब पुनः उससे वर मांगने को कहा तो उसने सत्यवान के पुत्रों की मां बनने का बुद्धिमत्तापूर्ण वर माँगा, यमराज के तथास्तु कहते ही मृत्युपाश से मुक्त होकर वटवृक्ष के नीचे पड़ा हुआ सत्यवान का मृत शरीर जीवित हो उठा। तब से अखंड सौभाग्य प्राप्ति के लिए इस व्रत की परंपरा आरंभ हो गयी और इस व्रत में वटवृक्ष व यमदेव की पूजा का विधान बन गया।

वट वृक्ष का महत्व-

शास्त्रों के अनुसार पीपल वृक्ष के समान वट वृक्ष यानी बरगद का वृक्ष भी विशेष महत्व रखता है। पुराणों के अनुसार - वटवृक्ष के मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु व अग्रभाग में शिव का वास माना गया है। अत: ऐसा माना जाता है कि इसके नीचे बैठकर पूजन व व्रतकथा आदि सुनने से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। यह वृक्ष लम्बे समय तक अक्षय रहता है, इसलिए इसे अक्षयवट भी कहते हैं। जैन और बौद्घ भी अक्षयवट को अत्यंत पवित्र मानते हैं। जैनों का मानना है कि

उनके तीर्थकर भगवान ऋषभदेव ने अक्षयवट के नीचे बैठकर तपस्या की थी। प्रयाग में इस स्थान को ऋषभदेव तपस्थली या तपोवन के नाम से जाना जाता है।
वटवृक्ष कई दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण है, सबसे पहले यह वृक्ष अपनी विशालता के लिए प्रसिद्ध है। दार्शनिक दृष्टि से देखा जाए तो यह वृक्ष दीर्घायु का प्रतीक है, क्योंकि इसी वृक्ष के नीचे राजकुमार सिद्धार्थ ने बुद्धत्व को प्राप्त किया और भगवान बुद्ध कहलाए। बोध ज्ञान को प्राप्त करने के कारण इस अक्षय वटवृक्ष को बोधिवृक्ष भी कहते हैं, जो गया तीर्थ में स्थित है। इसी तरह वाराणसी में भी ऐसे वटवृक्ष हैं जिन्हें अक्षयवट मानकर पूजा जाता है। वटवृक्ष वातावरण को शीतलता व शुद्धता प्रदान करता है और आध्यात्मिक दृष्टि से भी यह अत्यंत लाभकारी है। अत: वट सावित्री व्रत के रूप में वटवृक्ष की पूजा का यह विधान भारतीय संस्कृति की गौरव-गरिमा का एक प्रतीक है और इसके द्वारा वृक्षों के औषधीय महत्व व उनके देवस्वरुप का भी ज्ञान होता है।

शरीफा शरवारी,+3 दितीय वर्ष

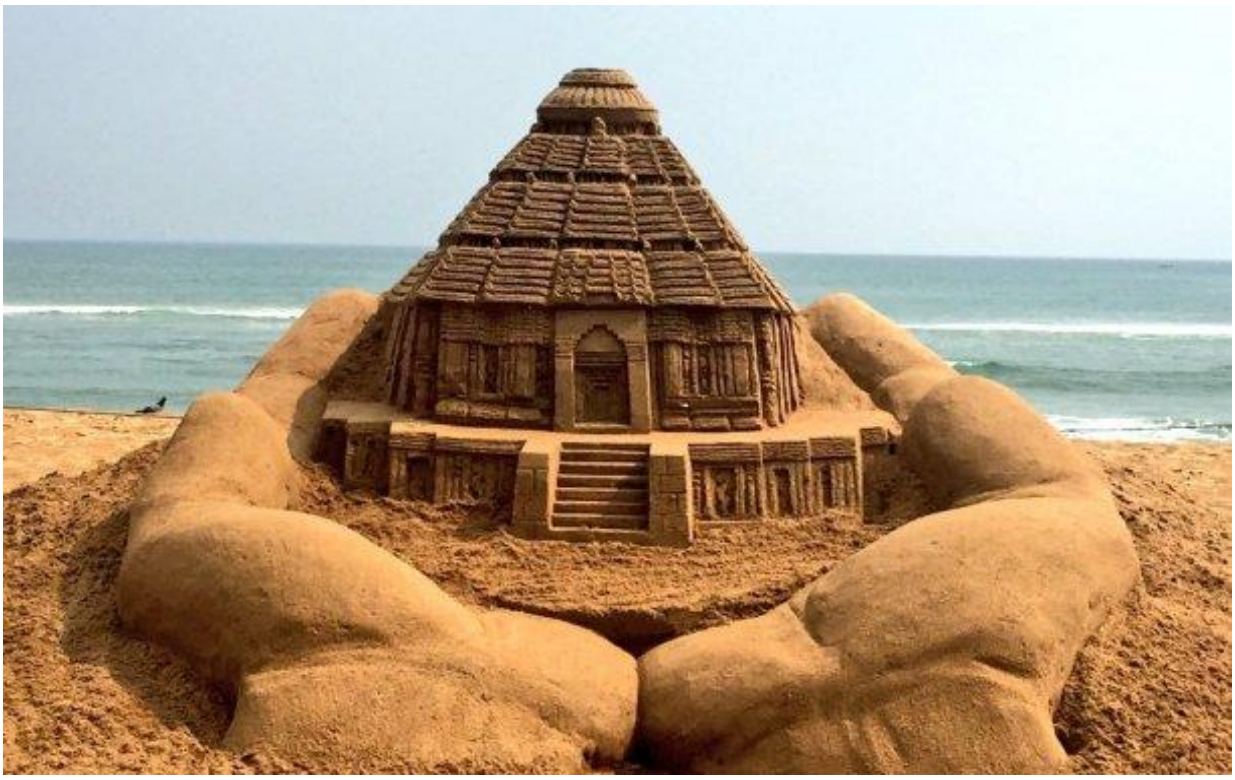

आपकी बात

हम अब न तो विभाग की छात्रा रहीं हैं और न ही कमला नेहरू महिला महाविद्यालय की। जीवन की चलती यात्रा में हर वक्त कुछ नया दायित्व नई कर्तव्य का बोध होता रहता है। इस व्यस्त जीवन में मनोरंजन का साधन बन जाता है हिंदी भारती। केवल मनोरंजन ही नहीं कुछ शिक्षा कुछ जानकारी भी प्राप्त होती है। केवल पढ़ना नहीं होता बल्कि अपने लेख के माध्यम से अपने सपनों को साकार करने का अवसर भी मिलता है। मैं धन्यवाद करती हूं हिंदी भारती का और हमेशा इसके साथ जुड़े रहने का प्रयास भी करती रहूंगी।

धन्यवाद

पिंकी सिंह, भूतपूर्व छात्रा

हिंदी विभाग, कमला नेहरू महिला महाविद्यालय

कॉलेज और ई पत्रिका से हम दो साल तक जुड़े रहे। अब कॉलेज नहीं और ना ही वो मस्ती। फिर भी हम उससे जुड़े हुए हैं ई पत्रिका के माध्यम से, और हमेशा जुड़े रहेंगें।

ई पत्रिका के माध्यम से हमें बहुत कुछ जानने को मिलता है और मेरे प्यारे दोस्तों के द्वारा लिखी गई ऐसी बहुत सी प्रेरणादायक कहानियाँ भी होती हैं, जो हमें प्रेरित करती है। आशा है आगे भी ऐसे ही हमेशा ई पत्रिका से जुड़े रहेंगे ।

धन्यवाद

सोनिआ नायक, भूतपूर्व छात्रा

हिंदी विभाग, कमला नेहरू महिला महाविद्यालय

बाबा नागार्जुन

https://youtu.be/bq7onO9i-8A

यादों के गलियारों से

ना जाने फिर कब साथ हो,,, विभाग की भूतपूर्व छात्रायें

महाप्रभु जगन्नाथ जी की रथयात्रा के उपलक्ष्य में पुरी से रथयात्रा का आँखों देखा हाल दूरदर्शन के माध्यम से हम सब तक पहुँचाती अध्यापिका डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

धन्यवाद